गोस्वामी तुलसीदास विरचित

रामलला-नहछू

सटीक

पण्डित वामदेव शर्मा

गोस्वामी तुलसीदास विरचित

रामलला-नहछू

सटीक

पण्डित वामदेव शर्मा

प्रकाशक

रामनरायन लाल

पब्लिशर और बुकसेलर

इलाहाबाद

१९२६

प्रथम संस्करण १०००] [मूल्य ।)

परिचय

भक्तप्रवर कविसम्राट् गोस्वामी तुलसीदास जी के अमूल्य रत्नों में से यह भी एक रत्न है। इस में श्रीरामचन्द्र जी के नहछू के समय का हास विलास का सोहर छन्द में वर्णन है। इसके पढ़ने सुनने का माहात्म्य गोस्वामी जी के ही मुख से सुन लीजिए—

जो यह नहछू गावैं गाइ सुनावइँ हो।
ऋद्धि सिद्धि कल्यान मुक्ति नर पावइँ हो॥

आज ऐसी अमूल्य रत्न का वहुतों को नाम तक मालूम नहीं। पर यह हर्ष का विषय है कि ज्यों ज्यों हिन्दी उन्नत दशा को प्राप्त हो रही है त्यों त्यों हिन्दी प्रेमी सज्जनों का चित्त प्राचीन कवियों के काव्यामृत का रसास्वादन करने में प्रवृत्त हो रहा है। इसी आशा पर मैंने यह छोटी सी पुस्तिका सरल भाषा सहित हिन्दी प्रेमी जनों के सामने उपस्थित की है। जिससे सर्व साधारण जन अमर कवि गोस्वामी जी की इस रसमयी कविता का रसपान कर तृप्त हों।

आशा है कि भक्तजन इस पुस्तक को अपनाकर मेरे परिश्रम को सार्थक करेंगे।

श्रावण शुक्ल ५
सम्वत् १९८३ विक्रमी

वामदेव

॥ श्रीसीतारामचन्द्राभ्यां नमः ॥

रामलला-नहछू

सोहर छन्द

आदि सारदा गनपति गौरि मनाइय हो।
रामलला कर नहछू गाइ सुनाइय हो॥
जेहि गाये सिधि होय परम निधि पाइय हो।
कोटि जनम कर पातक दूरि सो जाइय हो १॥

सबसे पहले सरस्वती, गणेश और पार्वती का विनय करता हूँ। इसके बाद श्रीरामचन्द्र जी का नहछू गा कर सुनाता हूँ, जिसके गाने से सब कार्य सिद्ध (पूर्ण) होते हैं, परम निधि (मोक्ष पद) मिलता है और करोड़ों जन्म के पाप दूर हो जाते हैं॥ १॥

कोटिन बाजन बाजहिं दसरथ के गृह हो।
देवलोक सब देखहिं आनँद अति हिय हो॥
नगर सोहावन लागत बरनि न जातै हो।
कौसल्या के हर्ष न हृदय समातै हो॥ २॥

राजा दशरथ के घर करोड़ों बाजा बज रहे हैं, इस उत्सव को देवलोक के सब रहने वाले देखते हैं और उनके हृदय में बड़ा आनन्द होता है। नगर (अयोध्या पुरी) बड़ा सुहावना लगता है, उसकी शोभा का बखान नहीं हो सकता। महारानी कौशल्या जी के हृदय में आनन्द समाता नहीं। अर्थात् कौशल्या जी बहुत ही प्रसन्न हैं॥ २॥

आले हि बाँस के माँडव मनिगन पूरन हो।
मोतिन्ह झालरि लागि चहूँ दिसि झूलन हो॥

गंगाजल कर कलस तौ तुरित मँगाइय हो।
जुवतिन्ह मंगल गाइ राम अन्हवाइय हो ॥ ३ ॥

हरे हरे बासों का मण्डप बना है, उसमें मणियाँ पोही गयी हैं। चारों ओर मोतियों की झालरें झूल रही हैं। शीघ्र गङ्गाजल से भरा हुआ कलसा मँगावाया गया। उस जल से युवतियाँ मङ्गल गाती हुई श्रीरामचन्द्र जी को नहला रही हैं ॥ ३ ॥

गजमुकुता हीरा मनि चौक पुराइय हो।
देइ सुअरघ राम कहँ लेइ बैठाइय हो ॥

कनक खंभ चहुँ ओर मध्य सिंहासन हो।
मानिकदीप बराय बैठि तेहि आसन हो ॥ ४ ॥

गजमुक्ता, हीरा और मणियों से चौक पुराया गया, सुन्दर अर्घ्य देकर श्रीरामचन्द्र जी को चौके पर बैठाया गया। चारो ओर सोने के खंभे के मध्य में सिंहासन है, और मण्डप में मणियों के दीप जल रहे हैं, उस सिंहासन पर श्रीरामचन्द्र जी बैठाये गये ॥ ४ ॥

बनि बनि आवति नारि जानि गृह मायन हो।
बिहँसति आउ लोहारिनि हाथ बरायन हो ॥

अहिरिन हाथ दहेंड़ि सगुन लेइ आवइ हो।
उनरत जोबन देखि नृपति मन भावइ हो ॥ ५ ॥

दशरथ के यहाँ मायन (तेल उबटन का उत्सव) जान कर स्त्रियाँ बन ठन कर आ रही हैं, मुसकुराती हुई लोहारिन हाथ में लोहे का छल्ला लिये आती है। अहिरिन हाथ में दही की हड़िया लिये सगुन ले आ रही है, उसकी उठती जवानी को देख राजा दशरथ के मन में वह बड़ी अच्छी लगी ॥ ५ ॥

रूपसलोनि तँबोलिनि बीरा हाथहि हो।
जाकी ओर बिलोकहि मन तेहि साथहि हो ॥

दरजिनि गोरे गात लिहे कर जोरा हो।
केसरि परम लगाइ सुगंधन बोरा हो ॥ ६ ॥

सुन्दर रूपवाली तमोलिन हाथ में पान का बीड़ा लिये हुए है। जिसकी ओर वह देखती है, उसका मन अपने साथ कर लेती है, अर्थात् जिसको वह देखती है, उसी को अपने वश में कर लेती है। गोरे शरीर वाली दरजिन हाथ में जामा लिये है जो केशर के रङ्ग में अत्यन्त सुगन्ध युक्त रङ्गा गया है॥ ६॥

मोचिनि बदन संकोचिनि हीरा माँगन हो।
पनहि लिहे कर सोभित सुंदर आँगन हो॥
बतिया कै सुघरी मलिनिया सुंदर गातहि हो।
कनक रतनमनि मौर लिहे मुसुकातहि हो॥ ७॥

मोचिन सुन्दर अँगने में पनहीं लिये विराज रही है और सङ्कोच मुख से हीरा माँग रही है। बोलने में चतुर सुन्दर शरीर वाली मालिन हाथ में सोना, रत्न, मणि आदि से बना हुआ मौर लिये मुसका रही है॥ ७॥

कटि कै छीन बरिनिआँ छाता पानिहि हो।
चन्द्रबदनि मृगलोचनि सब रस खानिहि हो॥
नैन बिसाल नउनियाँ भौं चमकावइ हो।
देइ गारी रनिवासहि प्रमुदित गावइ हो॥ ८॥

चन्द्रमा के समान मुखवाली, मृगी के नेत्र के समान नेत्रवाली सब रसों के भण्डार, कमर की पतली बारिन हाथ में छाता लिये खड़ी है। बड़े बड़े नेत्र वाली नाउन भौंहें चमका रही है। सब रनिवास को गाली दे दे प्रसन्न मन से गीत गा रही है॥ ८॥

कौशल्या की जेठि दीन्ह अनुसासन हो।
नहछू जाइ करावहु बैठि सिंहासन हो॥
गोद लिये कौसल्या बैठी रामहि बर हो।
सोभित दूलह राम सीस पर आँचर हो॥ ९॥

कौशल्या की बड़ी वृद्धाओं ने आज्ञा दी कि सिंहासन पर बैठ कर नहछू कराओ। दूलह श्रीरामचन्द्र जी को गोद में लेकर कौशल्या जी चौक पर जा कर बैठीं। दूलह श्रीरामचन्द्र जी शोभ रहे हैं, उनके सिर पर माता का आँचल पड़ा है॥ ९॥

नाउनि अति गुन खानि तौ बेगि बोलाई हो।
करि सिंगार अति लोन तौ विहसति आई हो॥
कनक-चुनिन सौं लसित नहरनी लिये कर हो।
आनन्द हिय न समाइ देखि रामहि बर हो॥ १०॥

गुणों की खान नाउन शीघ्र बोलाई गयी, अति सुहावन शृङ्गार करके वह मुसकुराती हुई आयी। वह सोने के छोटे छोटे नगों से जड़ी हुई नोहरनी हाथ में लिये हुए है, दूलह श्रीरामचन्द्र जी को देख उसके हृदय में आनन्द नहीं समाता॥ १०॥

काने कनक तरीवन बेसरि सोहइ हो।
गजमुकुता कर हार कंठमनि मोहइ हो॥
कर कंकन कटि किंकिनि नूपुर बाजइ हो।
रानी कै दीन्हीं सारी तौ अधिक बिराजइ हो॥ ११॥

नाउन के कान में कर्णफूल, नाक में सुन्दर बेसर (झुलनी) शोभा दे रही है। उसके गले के गजमुक्ता का हार और कंठे के दाने मन को मोह लेते हैं। उसके हाथ में कंगना, कमर में करधनी और पैर में बिछिया बज रही है। और रानी की दी हुई साड़ी तो उसके अंग पर और भी अधिक शोभा दे रही है॥ ११॥

काहे रामजिउ साँवर लछिमन गोर हो।
कीदहुँ रानि कौसिलहि परिगा भोर हो॥
राम अहहिं दसरथ कै लछिमन आन क हो।
भरत सत्रुहन भाइ तौ श्रीरघुनाथ क हो॥ १२॥

श्रीरामचन्द्र जी साँवले और लक्ष्मण जी गोरे क्यों हैं? न जाने रानी कौशल्या जी को भोर पड़ गया क्या? श्रीरामचन्द्र जी दशरथ के हैं और लक्ष्मण जी दूसरे के हैं। भरत, शत्रुघ्न तो श्रीरघुनाथ जी के भाई हैं॥ १२॥

आजु अवधपुर आनँद नहछू राम क हो।
चलहु नयन भरि देखिय सोभा धाम क हो॥

अति बड़ भाग नउनियाँ छुऐ नख हाथ सों हो।
नैनन्ह करत गुमान तो श्रीरघुनाथ सों हो॥ १३॥

आज श्रीरामचन्द्र जी का नहछू है, अवधपुर में आनन्द मङ्गल हो रहा है। चलो शोभा के स्थान श्रीरामचन्द्र जी को नेत्र भर देखें। आज नाइन ही का बड़ा भाग है कि श्रीरामचन्द्र जी के नाखून अपने हाथ से छू रही है, वह श्रीरामचन्द्र जी से नेत्रों द्वारा अभिमान कर रही है॥ १३॥

जो पगु नाउनि धोवइ राम धोवावइँ हो।
सो पग धूरि सिद्ध मुनि दरसन पावइँ हो॥
अतिसय पुहुप क माल राम उर सोहइ हो।
तिरछी चितवनि आनँद मुनिमुख जोहइ हो॥ १४॥

जिस पग को नाउन धो रही है और श्रीरामचन्द्र जी धोआ रहे हैं उस पग की धूली का दर्शन सिद्ध मुनि ही पाते हैं। श्रीरामचन्द्र जी की छाती पर पुष्पों की माला अत्यन्त शोभा पा रहे हैं। उनकी टेढ़ी चितवन और प्रसन्न मुख को मुनि लोग जोहा करते हैं अर्थात् उनका दर्शन चाहा करते हैं॥ १४॥

नख काटत मुसुकाहिं बरनि नहिं जातहि हो।
पदुम-पराग-मनि मानहुँ कोमल गातहि हो॥
जावक रचि क अँगुरियन्ह मृदुल सुठारी हो।
प्रभु कर चरन प्रछालि तो अति सुकुमारी हो॥ १५॥

श्रीरामचन्द्र नाखून कटाते हुए मुसुकाते हैं जिसका वरनन नहीं हो सकता, श्रीरामचन्द्र जी का कोमल अङ्ग मानों पद्मराग मणि है अर्थात् श्रीरामचन्द्र जी का शरीर कोमल और पद्म राग मणि के समान श्याम है। अति सुकुमारी नाउन प्रभु श्रीरामचन्द्र जी का पैर धोती है और कोमल सुन्दर अँगुलियों में रच कर महावर लगाती है॥ १५॥

भइ निवछावरि बहुबिधि जो जस लायक हो।
तुलसिदास बलि जाउँ देखि रघुनायक हो॥

राजन दीन्हे हाथी रानिन्ह हार हो।
भरि गे रतनपदारथ सूप हजार हो॥ १६॥

अनेक प्रकार से निछावर हुई, जो जिस लायक था उसको वह मिला। तुलसीदास श्रीरामचन्द्र जी को देख कर बली जाते हैं। राजा ने हाथी दिये और रानियों ने हार दिया, हज़ारों सूप रत्न पदार्थों से भर गये॥ १६॥

भरि गाड़ी निवछावरि नाउ ले आवइ हो।
परिजन करहिं निहाल असीसत आवइ हो॥
तापर करहिं सुमौज बहुत दुख खोवहिं हो।
होइ सुखी सब लोग अधिक सुख सोवहिं हो॥ १७॥

नाऊ निछावर से भरी हुई गाड़ी ले आता है। परिजनों ने उसे सन्तुष्ट कर दिया वह आशीर्वाद देते हुए आता है। इस पर आनन्द मनाते हैं, बहुत से कष्टों को खो दिये। सब लोग सुखी होकर अधिक सुख से सो रहे हैं॥ १७॥

गावहिं सब रनिवास देहिं प्रभु गारी हो।
रामलला सकुचाहिं देखि महतारी हो॥
हिलि मिलि करत सवाँग सभा रसकेलि हो।
नाउनि मन हरषाइ सुगंधन मेलि हो॥ १८॥

सब रनिवास मङ्गल गाती हैं और भगवान् को गाली देती हैं, गाली सुन माता को सामने देख श्रीरामचन्द्र जी सकुचाते हैं! रनिवास की सब स्त्रियाँ मण्डप में परस्पर मिल कर हँसी मजाक का स्वाँग रचती हैं। सुगन्धों को लगा कर नाउन मन में प्रसन्न होती है॥ १८॥

दूलह कै महतारि देखि मन हरषइ हो।
कोटिन्ह दीन्हेउ दान मेघ जनु बरखइ हो॥
रामलला के नहछू अति सुख गाइय हो।
जेहि गाये सिधि होइ परमनिधि पाइय हो॥१९॥

माता दूलहे को देख कर मन में प्रसन्न होती है। करोड़ों दान दिया अर्थात् इतनी वस्तुओं का दान दिया गया मानो मेघ बरसता हो। श्रीरामचन्द्र जी का नहछू

अति सुख से गाइये, जिसके गाने से सब कार्यों की सिद्धि होती है और महान् ऐश्वर्य मिलता है ॥ १९ ॥

दसरथ राउ सिंहासन बैठि बिराजहिं हो।
तुलसिदास बलि जाहि देखि रघुराजहि हो॥
जे यह नहछू गावैं गाइ सुनावइँ हो।
ऋद्धि-सिद्धि कल्यान मुक्ति नर पावइँ हो॥२०॥

राजा दशरथ सिंहासन पर बैठे विराज रहे हैं। श्रीरामचन्द्र जी को देख कर तुलसीदास जी बलि जाते हैं। जो इस नहछू को गाते हैं और गाकर सुनाते हैं वे ऋद्धि, सिद्धि, कल्याण और मोक्ष पाते हैं ॥ २० ॥

शुभमस्तु

Printed by RAMZAN ALI SHAH at the National Press, Allahabad.

हिन्दी की अनूठी पुस्तकें

बालमित्र मासिक ग्रंथमाला की पुस्तकें

ये पुस्तकें बालकों के बड़ी रुचिकर हैं। पुस्तकें धार्मिक शिक्षा, सामाजिक नैतिक बातों का मन बहलाव के साथ साथ पाठ पढ़ाती हैं। ये पुस्तकें बालक बड़ी रुचि से पढ़ते हैं। इन पुस्तकों के अध्ययन से देश प्रेम, जाति प्रेम और आत्मबल का भाव जागृत होता है।

१—बाल रामायण ... ... ।-)
२—बाल भारत ... ... ।-)
३—भारत का प्राचीन इतिहास ... ।-)
४—पुराणों की कहानियाँ पहिला भाग ।-)
५—भारत का भूगोल ... ... ।-)
६—ईसब्नीति कथा पहिला भाग ... ।-)
७—विज्ञान की सरल बातें ... ।-)
८—श्री रामकृष्ण कथामृत पहिला भाग ।-)
९—रामायण के उपदेश ... ... ।-)
१०—राजपूतों की कहानियाँ ... ।-)
११—नलदमयन्ती की कथा... ... ।-)
१२—अलादीन ... ... ।-)
१३—रविनस क्रूसो ... ... ।-)
१४—ईश्वरचन्द्र विद्यासागर ... ।-)
१५—ईसब्नीति कथा दूसरा भाग ... ।-)
१६—श्री रामकृष्ण कथामृत दूसरा भाग ।-)
१७—पुराणों की कहानियाँ दूसरा भाग ... ।-)

हिन्दी शब्दार्थ पारिजात कोष

संवर्द्धित और संशोधित संस्करण

मूल्य ३)

१—युगल कोष ... ... ४)
२—गुटका हिन्दी कोष ... ... १॥)
३—हिन्दी महाभारत जिल्ददार सचित्र १।)
४—भारतीय उपाख्यान माला ... १।)
५—श्रीराम कथा सचित्र .. ... १)
६—श्रीकृष्ण कथा सचित्र ... ... १)
७—सौभाग्य सोपान ... ... ।॥)
८—शेक्सपियर कथा गाथा ... ... १॥)
९—विद्यार्थी त्रिलोचन .. ... १॥)
१०—नवयुवक गाथा ... ... १॥)
११—प्रेम सागर ... ... ।॥)
१२—तुलसी संग्रह ... ... ॥=)
१३—श्रीमद्भागवत संग्रह सचित्र ... ॥=)
१४—रामायणीय संग्रह ... ... ॥=)
१५—सच्ची मनोहर कहानियाँ ... ॥=)
१६—उपदेश-रत्न-माला ... ... ।-)
१७—संक्षिप्त पराशर स्मृति ... ... ।-)
१८—संक्षिप्त मनुस्मृति ... ... ।-)
१९—संक्षिप्त विष्णुपुराण ... ... ॥=)
२०—आदर्श महाभारत प्रथम भाग ... ॥=)
२१— ,, ,, दूसरा भाग ... ॥=)
२२—भारत के प्रसिद्ध पुरुष ... ।=)
२३—आश्चर्य सप्तदशी ... ... ।-)
२४—ग्रीस और रोम की दन्त कथाएँ ... ।-)
२५—संक्षिप्त मार्कण्डेय पुराण ... ... ।-)
२६—सरल पत्र-बोध ... ... ।-)
२७—संक्षिप्त कल्कि पुराण ... ... ।-)
२८—शिष्टाचार पद्धति ... ... ।-)
२९—हिन्दी निबन्ध शिक्षा ... ... ॥=)
३०—भाषा हितोपदेश ... ... ।-)
३१—दस कुमारों का वृत्तान्त ... ... ।-)
३२—नाटकीय कथा ... ... ।-)
३३—शैब्या हरिश्चन्द्र ... ... ॥)
३४—याज्ञवल्क्य स्मृतिसार ... ... ।-)
३५—श्रीमद्भागवतगीतार्थ संग्रह ... ।-)
३६—उपासनाकल्पद्रुम ... ... ।-)
३७—पौराणिक उपाख्यानमाला प्रथम खण्ड ॥=)
३८— ,, ,, दूसरा खण्ड ॥=)
३९—राबिन्सन क्रूसो सचित्र ... ... १)
४०—लावण्य और अनङ्ग ... ... ॥)
४१—साहित्य विटप ... ... ॥)
४२—साहित्य सरोज ... ... ॥=)

मिलने का पता—रामनरायन लाल, बुकसेलर, इलाहाबाद

गोस्वामी तुलसीदास कृत पुस्तकें

१—	तुलसीदासकृत रामायण छोटा गुटका	॥)
२—	" " गुटका	१)
३—	" " सटीक गुटका	३)
४—	" " सचित्र बड़े अक्षर में मूल	२)
५—	" " सचित्र और सटीक बड़े अक्षर में....	४)
६—	" विनय-पत्रिका सटीक और सचित्र	२)
७—	" गीतावली सटीक	२)
८—	" कवितावली सटीक	२)
९—	" दोहावली सटीक	१)
१०—	" वैराग्य-संदीपिनी सटीक	=)
११—	" रामलला-नहछू सटीक	=)
१२—	" बरवै-रामायण सटीक	≡)
१३—	" पार्वती-मंगल सटीक	।)
१४—	" जानकी-मंगल सटीक	।=)
१५—	" रामाज्ञाप्रश्न सटीक	॥)
१६—	" श्रीकृष्णगीतावली सटीक	।=)

१—वाल्मीकि रामायण सटीक और सचित्र (सम्पूर्ण) .... १६)

मिलने का पता—

रामनरायन लाल

पब्लिशर और बुकसेलर

१, बैंक रोड, इलाहाबाद